नागार्जुन (अकाल और उसके बाद की व्याख्या)

नागार्जुन

दाने आये घर के अंदर ---- कई दिनों के बाद।

1. व्या० → प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक (एकता) में संकलित 'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता से ली गयी है। इस कविता के कवि नागार्जुन जी हैं। हिंदी के प्रगतिशील कवियों में नागार्जुन का नाम सर्वोपरि है।

Teacher's Signature__________

Scanned by CamScanner

Page No :
Date : / /

अकाल और उसके बाद' कविता उनके 'सतरंगे पंखों वाली' संग्रह में संकलित है।

प्रसंग → इन पंक्तियों में अकाल के दिनों में जब घर में दाने आते हैं, उस समय उठी प्रसन्नता और आनंद की लहर घर-भर में फैलती है, उसका चित्रण किया गया है।

व्याख्या → अकाल के दिनों में चूल्हा रोता है, लेकिन कई दिनों के बाद जब दाने घर के अंदर आते हैं, तब चूल्हा जलता है और धुआँ भी आँगन के ऊपर उठता है। तब घर-भर की आँखें खुशी से चमकने लगती हैं। इस नवीन प्रसन्न स्थिति में कौआ भी अपने पंख खुजलाता है।

विशेष (i) कौए का पंख खुजलाना कोई सामान्य प्रक्रिया नहीं है, लेकिन यह अस्वाभाविक बिल्कुल नहीं है। यह व्यंजना है उस ऊर्जा की जो अन्न घर आ जाने से पैदा होती है। यह भूख पर विजय पा लेने की जो प्रतिक्रिया होती है, उसका संकेत है।

(ii) यह जीवन के चिह्न हैं। अन्न जीवन-से विजय का संकेत है। नागार्जुन जन-जन से सुपरिचित कवि लगते हैं।

(iii) बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता स्वाभाविक अलंकार है।

Teacher's Signature